

खाद्द पदार्थों की बर्बादी तथा पैगम्बराना शिक्षाओं की प्रासंगिकता

डा. सैयद ज़फ़र महमूद

ब्रिटेन के शोध संस्थान इन्स्टीट्यूशन फॉर मेकेनिकल इन्जीनियर्स की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में हर साल 4.4 बिलियन टन खाना तैयार किया जाता है। लेकिन निम्न कारणों से 30 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तैयार खाद्द पदार्थ (जिनकी मात्रा 1.2 से 2 मिलियन टन तक बनती है), नष्ट हो जाते हैं। (1) कृषि, यातायात और भण्डारों की सुरक्षा की अनुचित व्यवस्था, 2) व्यापारिक मूल्यों में गिरावट तथा 3) निम्नस्तरीय सामाजिक प्रशिक्षण। दूसरी बात यह कि 30 प्रतिशत सब्जियों को उगाए न जाने या स्तेमाल में न लाए जाने का कारण है उन सब्जियों का सुशोभित न होना। तीसरी बात यह कि अमरीका, योरोप तथा अन्य विकसित देशों में जो लोग खाना खरीदते हैं उसका आधा भाग यूं ही फेंक देते हैं।

इस स्थिति का दूसरा पहलू यह है कि जो अन्न कभी खाया ही नहीं जाता उसे उगाने के लिए 145 खरब गेलन पानी उयोग हो चुका होता है। इसके अतिरिक्त कृषि योग्य भूमि का उपयोग, ऊर्जा तथा खाद भी बड़ी मात्रा में बेकार जाती है। उर्जा का बड़ा भाग भूमि में दबे हुए जीवाष्मों को जला कर प्राप्त किया जाता है जिस से प्रदूषण तथा प्रदूषण के ताप में वृद्धि होती है। इस तरह जो खाद् पदार्थ आखिरकार नष्ट ही हो जाना हैं उन्हें उगाने और फिर सडाने से होने वाले प्रदूषण से भी जीवन को नुकसान पहुंचता रहता है। बिक्रिय को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों से प्रेरित हो कर उपभोक्ता आवश्यकता से अधिक उपभोग वस्तुएं खरीद लेते हैं जिसमें से बहुत सी वस्तुएं उपयोग या उपभोग किए बिना ही नष्ट हो जाती हैं। इस बर्बादी के ज़िम्मेदार भी तीन कारक हैं: पूंजीवादी बाज़ारोन्मुख नज़रिया, समय रहते उर्जा का उपलब्ध न होना तथा सडकों की खराब स्थिति।

यह सारे तत्व हमारे नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्तर से सम्बंध रखते हैं। विश्लेषण के अनुसार यदि खाद् पदार्थों को नष्ट होने से रोक लिया जाए तो दुनिया भर के इंसानों के लिए खाने की आपूर्ति में 60 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक वृद्धि हो सकती है। इस तरह वातावरण प्रदूषण पर भी कुछ हद तक नियन्त्रण पाया जा सकता है।

फ़िलहाल दुनिया की कुल जनसंख्या 7 अरब है। अनुमान है कि सन 2075 तक यह संख्या बढ़ कर 9.5 अरब तक पहुंच जाएगी। अर्थात् कुल आबादी में 35 प्रतिशत वृद्धि हो जाएगी। जबकि दूसरी तरफ़ इक्कीसवीं सदी के मध्य तक दुनिया भर के लिए कृषि उत्पाद की आवश्यकता मौजूदा की अपेक्षा 70 प्रतिशत और बढ़ चुकी होगी। 20 वीं सदी में इंसानों के उपयोग के लिए धरती के नीचे से पानी निकालने में वृद्धि की रफ़्तार जनसंख्या वृद्धि की रफ़्तार के मुक़ाबले दो गुणा से भी अधिक रही। फ़िलहाल दुनिया में इंसानों के द्वारा हर साल 3.8 खरब क्यूबिक मीटर पानी का उपयोग होता है। इस में से 70 प्रतिशत कृषि के लिए खर्च होता है। अनुमान के अनुसार इक्कीसवीं सदी के मध्य तक दुनिया में खाद् पदार्थों की पैदावार के लिए 10 से 13 खरब क्यूबिक मीटर पानी की आवश्यकता होगी जो मौजूदा मात्रा की अपेक्षा 2.5 से 3.5 गुणा तक अधिक होगी।

दुनिया के भू क्षेत्र का कुल रक़बा (क्षेत्रफल) 14.8 गेगा हेक्टेअर है। इस में से 4.8 गेगा हेक्टेअर भूमि कृषि योग्य नहीं है। क्यूंकि वह मरुस्थलीय अथवा पर्वतीय भूमि है। या फिर टुण्ड्रा का क्षेत्र है अर्थात् योरोप, एशिया व उत्तरी अमरीका के वे क्षेत्र जहां धरती के नीचे की मिट्टी जमी हुई है जिसके कारण वहां पेड़ पौधे नहीं उग

सकते। फ़िलहाल खाद्द पदार्थों की पैदावार के लिए 4.9 गेगा हेक्टेअर भूमि उपयोग में आती है। शेष 5.1 गेगा हेक्टेअर भूमि दुनिया की वातावरणीय व्यवस्था को संतुलित करने का काम करती है। इस तरह मालूम हुआ कि धरती का जितना भाग खाद्द पदार्थ पैदा करने के लिए फ़िलहाल उपयोग हो रहा है उसमें वृद्धि की गुंजाइश नहीं है।

विकसित देशों के खुदरा व्यापारियों को यह समझाने की आवश्यकता है कि देखने में कम अच्छे लगने वाले खाद्द पदार्थों को रद्द न करें। इन्स्टीट्यूशन फ़ॉर मेकेनिकल इन्जीनियर्स ने दुनिया के वासियों से अपील की है कि कृषि उत्पादों के शोभनीय गुण पर ज़ोर देने से बचा जाए तथा खाद्द पदार्थों को नष्ट होने से बचाने के लिए सभी आवश्यक क़दम उठाए जाएं।

इस रिपोर्ट के परिप्रेक्ष्य में इस्लाम के अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल. (उन पर ईश्वर की कृपा हो) की उन शिक्षाओं की प्रासंगिकता एवं महत्त्व को समझा जा सकता है जो उन्होंने खाने पीने की आदतों तथा वस्तुओं के उपभोग के सम्बंध में दी हैं। इन्हें इस्लामी आदाब (संस्कार) कहा जाता है, लेकिन अफ़सोस की बात है कि इन शिक्षाओं की विरासत पाने वाले मुसलमान भी इनके महत्त्व को समझने तथा इन्हें बरतने में पीछे हैं हालांकि उन्हें

इनके अनुसार दुनिया का नैतृत्व करने के लिए आगे आने की आवश्यकता है। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की शिक्षाओं ने खाने और पीने को भी एक मज़हबी काम की तरह संस्कारों का पाबन्द कर दिया है। जैसे: अलग अलग खाना खाने के बजाए एक जगह मिल कर और बैठ कर खाना खाना, खाने को अल्लाह की देन समझकर उपयोग करना। खाने से पहले और बाद में हाथ धोना, कुल्ली करना और दांतों को साफ़ करना। दाहिने हाथ की तीन उंगलियों से छोटे छोटे निवाले मुंह में रखना, इस तरह खाना पेट में थोड़ा थोड़ा हो कर पहुंचता है और फिर अच्छी तरह से पचता है, खाने की मात्रा में संयम रखना।

खाना खाने के दौरान अपना ध्यान खाने पर ही रखना और फ़ालतू बातों या दूसरे कामों से ध्यान हटाना, पूरा पेट भर जाने से पहले ही हाथ रोक लेना ताकि ज़्यादा खाना खाने से पेट खराब न हो, शरीर मोटा व भारी न हो और आलसीपन व सुस्ती पैदा न हो। शायद इसी लिए सोने चांदी के बरतनों में खाना खाना भी मना है। खाते समय अपनी पसन्द या ना-पसन्द का इज़हार न करना, मौजूद खानों में से जो पसन्द हो उस पर संतोष कर लेना। अपनी ज़रूरत के हिसाब से ही प्लेट में खाना लेना, प्लेट में अपने आगे से ही निवाला बनाना या डिश में से अपने आगे से ही निकालना, न कि पूरी डिश में चम्मच घुमा कर अच्छा अच्छा हिस्सा तलाश करना,

प्लेट या बर्तन में खाना लगा न छोड़ना। खाने के बाद अल्लाह का शुक्र अदा करना वगैरह वगैरह। यह वे आदतें हैं जो खाने को व्यर्थ होने और सड़ने से बचाती हैं। फ़िज़ूल खर्ची व इसराफ़ अर्थात् आवश्यकता से अधिक जुटाना या खर्च करना और अनावश्यक उपभोग या उपयोग तो इस्लाम में हर चीज़ के लिए बुनियादी तौर से ही मना है।

खाने के संस्कारों में और भी कई बातें इस्लामी शिक्षाओं से हमें मिलती हैं जो हमें सभ्य बनाती हैं किन्तु उन पर आज कल ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जैसे: खाने के बहुत से विकल्प मौजूद हों तो अपनी पसन्द का खाना ले लिया जाए न कि हर प्लेट और डिश का स्वाद लिया जाए, फिर जो पसन्द न आए उसे फेंकना पड़े या दूसरा स्वाद लेने के लिए प्लेट खाली करना पड़े। हाथ बढ़ाने में दूसरों को पहले अवसर देना। इसी तरह अच्छा अच्छा खुद छांट लेने के बजाए दूसरों के लिए अच्छा हिस्सा छोड़ना। दावत (भोज आयोजन) में महमानों को सम्मान पूर्वक खाना परोसना। आजकल अपनी प्लेट हाथ में लेकर लाइन में खड़े हो कर अपना खाना खुद निकालने की जो व्यवस्था चल पड़ी है वह निश्चित रूप से इस्लामी संस्कारों के विरुद्ध है। इस व्यवस्था में खाना खाने में दिक्कत भी है, खड़े हो कर खाना खाने से पाचन प्रक्रिया पर

विपरीत प्रभाव भी पड़ता है और इस में खाना व्यर्थ भी बहुत होता है।

इसी तरह खाने की कोई वस्तु ज़मीन पर गिर जाए तो उसे साफ़ करके या धो कर खा लेना चाहिए, यह बात अल्लाह को बहुत पसन्द है और इसके पुरस्कार स्वरूप यह अल्लाह की व्यवस्था है कि इंसान रोग मुक्त रहता है। किन्तु यदि किसी चीज़ के खाने से नुक़सान की आशंका हो तो उसे कूड़े दान में डाल देना चाहिए। खाने की वस्तु को इधर उधर फेंकने से कीटाणु तो पैदा होते ही हैं, वस्तु का अपमान भी होता है जो अल्लाह को ना पसन्द है। ज़्यादा गरम खाना खाना भी मना है, इससे आंतों को नुक़सान पहुंचता है। जो चीज़ें हराम (वर्जित) की गयी हैं उनसे भी पूरी तरह बचना चाहिए क्योंकि वे सब शरीर या आत्मा को नुक़सान पहुंचाने वाली हैं, जैसे: सुअर, कुत्ते, आदि का मांस, खून व शराब, मरे हुए पशु, या ऐसे पशु जिन्हें अल्लाह के अलावा किसी ओर के नाम पर काटा गया हो या ग़लत तरीक़े से मारा गया हो।

मिल्लत-ए-इस्लामिया की यह ज़िम्मेदारी है कि वह दुनिया की इमामत करने के लिए अपनी बुनियादों को मज़बूत करे।

पैगम्बराना शिक्षाओं पर खुद भी अमल करे (सूरह अस्सफ़ की आयत 2, व 3 को ध्यान में रखते हुए) तथा दूसरों को भी इसकी

प्रेरणा दे। इसी तरह सच्चाई, इंसान व बहादुरी के गुणों को
विकसित करे।

अल्लामा इक़बाल के इस पैग़ाम पर ध्यान दे कि:

सबक़ फिर पढ़ सदाक़त का, अदालत का, शुजाअत का
लिया जाएगा तुझ से काम दुनिया की इमामत का